चुप तों मगरों: यातनापूर्ण स्थितियों से निर्मम साक्षात्कार

जनक राज पारीक

सृजन के दो महत्वपूर्ण उपादान है– विचार और संवेदना। विचार रचना में धार बनाता है और संवेदना उसकी नोक रचती है, उसमें चुभन क्षमता निर्मित करती है। सजगता एवं संवेदनशीलता और दृष्टि भी आलोचनात्मकता रचनाकार के अन्तर्गत से सम्बन्धित है जबकि विचारों की प्राप्ति जगत के बाहय यथार्थ को देखना तथा अपनी अन्तर्दृष्टि और संवेदना के सहारे उसे पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देना गुरमीत के सृजनकर्म का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

सामाजिक विडम्बनाओं तथा मानव की यातनापूर्ण स्थातियों से निर्ममसाक्षात्कार कर उनकी कटूताओं और कूरताओं के प्रति पाठक को सजग सचेष्ट कर देना भी गुरमीत ने अपना दायित्व समझा है–

कदे–कदे चंद दी थां/चंदरे वी करनगे/रातां ते हकूमत/ते सरेआम होवेगा कत्ल/
सचियारा कोई/ पर/तू आपणा ख्याल रखीं/मैं तां डिग पयां हां/
समय दी अक्ख च किरक बणके *(आपणां ख्याल रखीं–पृ31)*

इसी कम में वर्तमान लिगांनुपात की समस्या तथा कन्या भ्रुण हत्या जैसे सघन्य अपराध के विरूध भी गुरमीत ने अपनी बात अत्यन्त मार्मिकता के साथ कही है–

नां धीआं होण परदेसणां/नां मावां ने हौंके मरणे/नां बाबल दा तुरला नीवां/
नां वीरांने कारज करने/सब साक–सकीरीयां चों/असीं मुकदीआं–मुकदीयां/
मुक जाणां लभणां नहीं साडा/चिड़ियां दा सिरनावां। *(चिड़ियां दा सिरनावां–पृष्ठ–50)*

यथार्थ की कूरता और विसंगति के बीच कहीं–कहीं नये विहान और नये संसार के प्रति अपनी आस्था को भी कवि ने अपनी ने पूरी उर्जा और संकल्पशक्ति के साथ व्यक्त किया है–

मेरे परवरदिगार/सब नूं बख्श दें/मुहब्बतां दी अगन/रस जीभां लई/वगदे साह/
सिर –जोगा आसमान/ते पैरां जोगी जमीन। *(बख्शिश पृ–72)*

भक्त व्यकितत्व का लेकर जीना और फिर पूरी तीव्रता और गहराई के साथ अपने अन्दर निजत्व की खोज करना बहुत दुविधापूर्ण और कष्टदायी मन:स्थिति होती है,जिसकी स्पष्ट झलक गुरमीत की कविता में स्थान–स्थान पर मिलती है–

तैनूं मैं/की दसां वे/सजण सुहेलड़िया/अजे मुक्की नहीं मेरी/मेरे मकान च/मेरे घर दी तलाश/
तां ही तां/हर वारी जदों कोई/बार खडकांउंदा है तां/विरलां थाणीं झाक के/
मैंनू पैंदा है आखणां /कि/मैं घर नहीं हां। *(मैं घर नहीं हां,पृ.–23)*

सामान्यजन भी दीन–हीन स्थिति को प्रकट करने का कविका अपना अनूठा ढंग है। *'तूं कल्ली कदे ना टक्करी'* शीर्षक देखते ही लगा कि यह कोई चुनौती देती हुई अश्लील रचना होगी,लेकिन शोषण की चक्की में पिसते,अभावों–चिंताओं में रीतते,दु:ख–दर्द भोगते, विवश जीवन बिताते व्यक्ति भी दयनीय स्थिति को बहुत मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति मिली है। इस कविता में–

पर इस वार वी/तेरे नाल आया/मजबूरियां दा वग/तेरे सिर ते/जिम्मेवारियां दा बोझ/
तेरी जीभ ते/ बेगाने गीत/ तेरे कुछड़/ नवजन्में उलांमे/तेरे पैरां च/छेती मुड़न दी काहल
(तूं कल्ली कदे ना टकरी पृ.–34–35)

गुरमीत बराड़ भी इन कविताओं में सम्प्रेषणीयता की कोई समस्या कहीं भी नहीं है।भाषा अत्यन्त आत्मीय तथा बिम्बऔर प्रतीक विधान बहुत ताजा एवं मौलिकतापूर्ण है, बानगी दृष्टव्य है–

टूणेहार ललारनां ने/मेरी रत्त चों रंग चुरा लिआ/पीघां झूटण हौकड़े/
मेरी काया नूं रूख बणा लिआ। (पीड़ कसीदे कढ़दी पृ.–29)

गुरमीत का दूसरा काव्य संग्रह –''चुप तों मगरों'' उनके प्रथम कविता–संकलन 'पड़छावियां दे मगरे मगर'से लेकर उनकी अब तक की काव्य–यात्रा को रेखांकित करता है।गुरमीत की अन्तर्दृष्टि विकसित ,भाषा परिपक्व,कथ्य वैविध्यपूर्ण तथा अभिव्यक्ति निरन्तर सूक्ष्म और सशक्त हुई है।